बचपन

बचपन क्या जीवन था

क्या जवानी का रोना

जब जवानी देख ली

अब पछताय क्या होना

बचपन अतुल्य अतुल्य बालमन

न किसी की फिकर

न सपनों का आंगन

मॉ के ऑचल की छॉव

दादा दादी का लड़क्पन

हंसती हुई मिठास

भईया के रूठ के मनाने के वह दिन

जब जीवन था ख्वास

अब नया परिदृशय नई बात

न कोई अपना न मनाना किसी को

बस चिन्ता ही चिन्ता

अब जीवन उदास

शोभित अग्रवाल